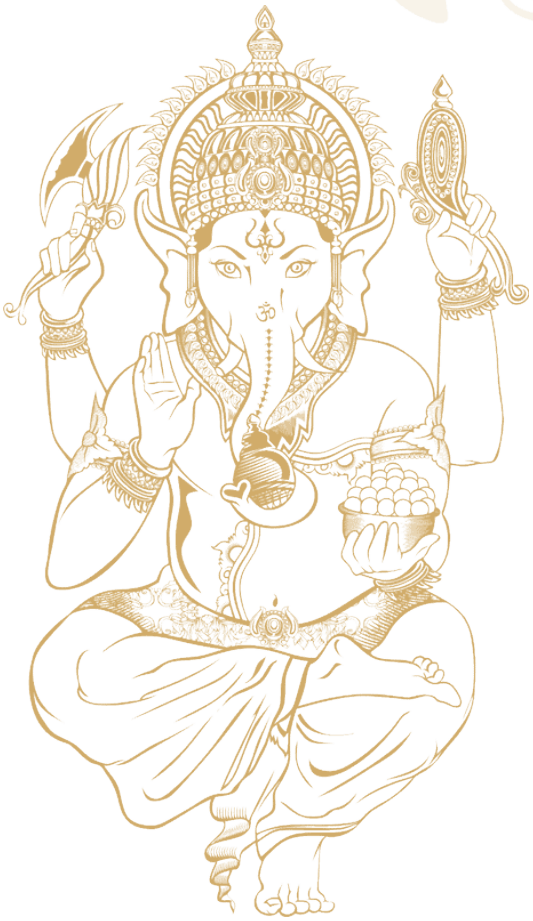

??????

17 Jan 1991

11:50 AM

Kolkata

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120708901**

तिथि 17/01/1991 **समय** 11:50:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Kolkata **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:44:11
अक्षांश 22:34:00 उत्तर **रेखांश** 88:21:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:23:24 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	19:58:06 घं
वेलान्तर	00:09:55 घं
सूर्योदय	06:19:12 घं
सूर्यास्त	17:14:01 घं
चैत्रादि संवत	2047
शक संवत	1912
मास	माघ
पक्ष	शुक्ल
तिथि	2
नक्षत्र	श्रवण
योग	वज्र
करण	बालव

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	वानर
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	जलचर
वर्ग	मार्जार
युँजा	अन्त्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	खे-खेमचन्द
पाया(रा.-न.)	ताम्र-ताम्र
होरा	चंद्र
चौघड़िया	लाभ

विंशोत्तरी

चन्द्र 4वर्ष 8मा 8दि

गुरु

25/09/2020
25/09/2036

गुरु	13/11/2022
शनि	26/05/2025
बुध	01/09/2027
केतु	07/08/2028
शुक्र	08/04/2031
सूर्य	25/01/2032
चन्द्र	26/05/2033
मंगल	02/05/2034
राहु	25/09/2036

योगिनी

मंगला 0वर्ष 5मा 19दि

संकटा

07/07/2018
07/07/2026

संकटा	16/04/2020
मंगला	07/07/2020
पिंगला	16/12/2020
धान्या	16/08/2021
भ्रामरी	07/07/2022
भद्रिका	17/08/2023
उल्का	16/12/2024
सिद्धा	07/07/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			14:10:13	मेष	भरणी	1	शुक्र	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			02:53:32	मक	उत्तराषाढ़ा	2	सूर्य	गुरु	शत्रु राशि	1.42	कलत्र	पितृ	अतिमित्र
चंद्र			17:04:54	मक	श्रवण	3	चंद्र	शनि	सम राशि	1.29	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल			05:30:18	वृष	कृतिका	3	सूर्य	बुध	सम राशि	1.06	पुत्र	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध			09:24:42	धनु	मूल	3	केतु	शनि	सम राशि	0.86	मातृ	ज्ञाति	वध
गुरु	व		16:23:42	कर्क	पुष्य	4	शनि	गुरु	उच्च राशि	1.45	भ्रातृ	धन	प्रत्यारि
शुक्र			21:21:30	मक	श्रवण	4	चंद्र	शुक्र	मित्र राशि	1.08	आत्मा	कलत्र	जन्म
शनि		अ	03:50:42	मक	उत्तराषाढ़ा	3	सूर्य	शनि	स्वराशि	1.41	ज्ञाति	आयु	अतिमित्र
राहु			04:17:04	मक	उत्तराषाढ़ा	3	सूर्य	शनि	मित्र राशि		---	ज्ञान	अतिमित्र
केतु			04:17:04	कर्क	पुष्य	1	शनि	शनि	मित्र राशि		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

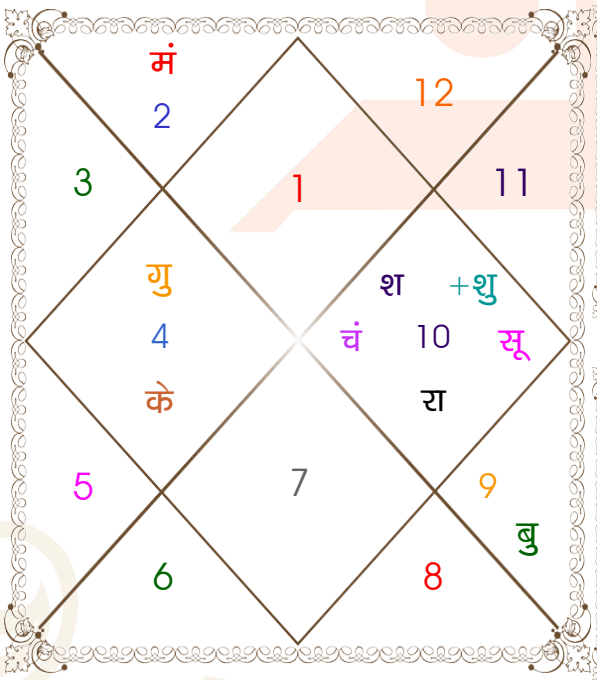

चन्द्र कुंडली

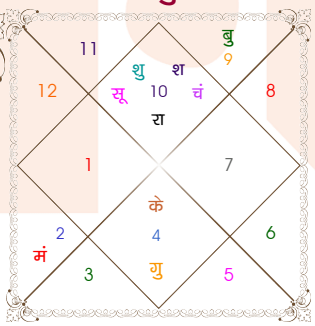

नवमांश कुंडली

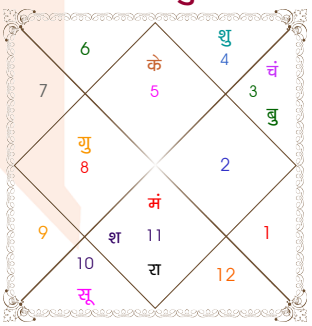

सर्वाष्टकवर्ग

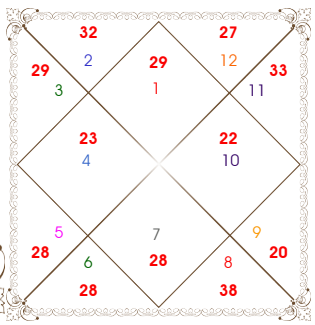

दशमांश कुंडली

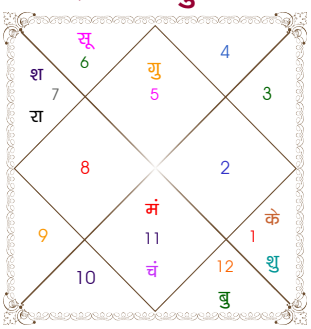

नक्षत्रफल

आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्मराशि मकर तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण वैश्य, गण देव, नाड़ी अन्त्य, योनि वानर तथा वर्ग मार्जार होगा। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आप के जन्म नाम का प्रारम्भ "खे" या "खै" अक्षर से होगा।

आपकी रूचि विभिन्न प्रकार के शास्त्रों के अध्ययन तथा ज्ञानार्जन प्राप्त करने में अधिक रहेगी। अतः आप परिश्रम पूर्वक इनका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करेंगे। आपकी पुत्रों की सख्यां अधिक रहेगी एवं जीवन में इनसे पूर्ण सुख को प्राप्त करेंगे। साथ ही आपकी मित्रता का क्षेत्र भी विस्तृत रहेगा। अतः मित्रों की बहुलता रहेगी एवं उनसे आपको यथोचित सहयोग एवं सम्मान प्राप्त होता रहेगा। सज्जनों के प्रति आपके मन में सेवा एवं श्रद्धा की भावना रहेगी फलतः आप इनको हार्दिक मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करने में अधिकांशतः सफल रहेंगे तथा वे भी आपसे पूर्ण रूप से भयभीत तथा प्रभावित होंगे इसके अतिरिक्त पुराणों तथा शास्त्रों को श्रवण करने की भी आपकी रूचि रहेगी एवं यत्नपूर्वक आप इनका श्रवण या अध्ययन करते रहेंगे।

शास्त्रानुरक्तो बहुपुत्रमित्रः सत्पात्रभक्ति विजितारिपक्षः।
प्राणी पुराणश्रवण प्रवीणश्चेज्जन्मकाले श्रवणं हि यस्य।।
जातकाभरणम्

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक शास्त्रों में सलंग्न, अधिक पुत्र और मित्रों वाला, सत्पात्रों का भक्त, शत्रुनाश करने वाला एवं पुराण श्रवण करने में तेज होता है।

देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहेगा। अतः इनकी सेवा तथा पूजा कार्य में आप प्रायः तत्पर रहेंगे। आप एक धनवान पुरूष होंगे तथा सुख पूर्वक जीवन में धनार्जन करके उसका उपभोग भी करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा स्वबुद्धि एवं योग्यता के बल पर किसी उच्चाधिकार प्राप्त प्रतिष्ठित पद प्राप्त करने में भी सफल हो सकेंगे। साथ ही आप की प्रवृति धार्मिक कृत्यों का पालन करने की भी रहेगी।

श्रावणायां द्विजदेवभक्तिनिरतो राजा धनी धर्मवान।
जातक परिजातः

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवता तथा ब्राह्मणों की भक्ति में तत्पर रहने वाला, राजा, धनी तथा धर्मनिष्ठ होता है।

समाज के सभी वर्गो में आप प्रिय होंगे तथा वे आपको पूर्ण मान सम्मान प्रदान करेंगे। विभिन्न शास्त्रों में पारंगत होने के कारण एवं श्रेष्ठ विद्वान के रूप में आप चारों तरफ ख्याति अर्जित करने में सफल रहेंगे। आप के मन में दया एवं करूणा की भावना विद्यमान

रहेगी तथा समयानुसार आप यथा शक्ति इस प्रवृति का अनुपालन करते रहेंगे। आप एक सौभाग्य शाली व्यक्ति होंगे तथा पत्नी के रूप में एक गुणवान तथा बुद्धिमान स्त्री को प्राप्त करेंगे। आप धनाढ्य पुरूष भी होंगे। अतः सांसारिक सुखों का आप आनन्द पूर्वक जीवन में परिवार सहित उपभोग करेंगे।

श्रीमाञ्छ्रवणे श्रुतवानुदारदारो धनान्वितः ख्यातः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक लक्ष्मीवान, पंडित, सौन्दर्ययुक्त, गुणीभार्या का पति, धनी तथा विख्यात होता है।

आप कृतज्ञता के गुण से सुसम्पन्न रहेंगे तथा समाज में किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा उपकृत होने पर उसके उपकार को हादिक रूप से स्वीकार करेंगे एवं विनम्रतापूर्वक उनका आभार भी प्रकट करेंगे। अतः आपकी इस प्रवृति से लोग आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आपका शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय होगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित भी रहेंगे एवं संतति संख्या भी आपकी अधिक ही रहेगी। इसके साथ ही सर्वप्रकार के सद्गुणों से युक्त होकर आप आनन्दपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

कृतज्ञः सुभगोदाता गुणैः सर्वैश्च संयुक्तः।
श्रीमान सन्तानबहुलः श्रवणे जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में जातक कृतज्ञ, सुन्दर, दानी, सर्वगुणसम्पन्न एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

ताम्र पाद में उत्पन्न होने के कारण आप राज्य या सरकार से धन लाभ अर्जित करने में हमेशा सफल रहेंगे तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। आप सन्तोषी प्रवृति के होंगे तथा अनावश्यक इच्छाओं को मन में उत्पन्न नहीं करेंगे। आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त रहेंगे तथा सभी लोग आपका आदर सत्कार करेंगे। विविध प्रकार की धन सम्पतियों तथा सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। माता पिता के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनसे भी आप पूर्ण धन सम्पति को प्राप्त करेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगे तथा नाना प्रकार के वाहन एवं भूमि से भी युक्त रहकर प्रसन्न रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे। आप में परोपकार की भावना भी रहेगी तथा सज्जन पुरूषों का आप नित्य आदर करेंगे। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

मकर राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका कद ऊंचा तथा मस्तक विशालाकृति का होगा। आपके नेत्र सुन्दर होंगे तथा शारीरिक सौन्दर्य भी आकर्षक रहेगा। संगीत के प्रति

आपके मन में विशेष आकर्षण रहेगा एवं इसका विशेष ज्ञान अर्जित करने के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगे तथा इसमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। शीत से आप व्याकुलता की अनुभूति करेंगे एवं इसको सहन करने में असमर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपके मन में पूर्ण निष्ठा होगी तथा आजीवन इसका आप यत्नपूर्वक अनुपालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। समाज में आप एक माननीय व्यक्ति होंगे एवं सभी लोग आपको हार्दिक मान सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी व्याप्त रहेगी। आप कभी कभी अल्प मात्रा में क्रोध का भी प्रदर्शन करेंगे। समाज के सभी वर्गों के लिए आपके मन में प्रायः प्रेम एवं स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा तथा घृणा एवं द्वेष की भावना किसी के भी प्रति नहीं रहेगी। आप अपनी आयु से अधिक आयु वाले मनुष्यों से प्रेम तथा मित्रता के संबंध स्थापित करने के इच्छुक रहेंगे। लेखन कार्य के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी। अतः कविता सृजन में आपको सफलता प्राप्त हो सकती हैं। आप में उत्साह की भावना विद्यमान रहेगी परन्तु भाग्य आपका प्रबल होगा अतः कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य स्वतः ही अल्प परिश्रम से सिद्ध हो जाएंगे। कभी कभी आप लालची भाव का भी प्रदर्शन करेंगे तथा अपने लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे।

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोळल्परोषो मनसिभवयुतो निर्धृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोळतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोळतिकर्णः।।
सारावली

आप पत्नी तथा पुत्र सहित अपने परिवार के पालन में अधिकांशतया व्यस्त रहेंगे। आप केवल दिखावे के लिए धर्म के प्रति अपनी श्रद्धा प्रदर्शित करेंगे एवं धार्मिक क्रियाओं का भी अनुपालन करेंगे। आप दूसरे लोगों की बातों से शीघ्र ही सन्तुष्ट तथा सहमत हो जाएंगे एवं उन्हीं के कहे अनुसार ही आचरण भी करेंगे। आप में आलस्य भी विद्यमान रहेगा। अतः आपके कार्य शनैः शनैः ही सम्पन्न होंगे। आपको भ्रमण तथा यात्रा करने का अत्याधिक शौक रहेगा एवं आपका अधिकांश समय भी इसी पर व्यतीत होगा। आप कठिन कार्यों को करने तथा अगम्य स्थानों पर जाने के लिए भी उत्सुक रहेंगे। साथ ही कभी कभी आप स्वभाव से कठोरता का प्रदर्शन भी अन्य जनों के समक्ष करेंगे। आप अपने जीवन काल में वात जनित रोगों से प्रायः व्याकुल रहेंगे एवं समय समय पर इनसे कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप सर्वप्रकार से सत्वगुणों से सुशोभित रहेंगे तथा जीवन में यत्नपूर्वक उनका पालन करते रहेंगे।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोळधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोळलसः।।
शीतालुर्मनुजोळटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोडगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोळघृणः।।
बृहज्जातकम्

आप अपने परिवारिक जनों के मध्य विशेष सम्मान अर्जित करने में अल्प मात्रा में ही सफल रहेंगे परन्तु कुल या परिवार की रीति का आप दृढता पूर्वक अनुपालन करेंगे एवं

उसकी वृद्धि के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगे। आप हमेशा स्त्री से पराजित रहेंगे तथा समस्त सांसारिक कार्यों को उसी के कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। किसी भी समस्या के समाधान के लिए स्वतंत्र निर्णय लेने में आप अपने आपको असमर्थ सा महसूस करेंगे। आपको विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का विस्तृत ज्ञान रहेगा। अतः समाज में दूर दूर तक एक श्रेष्ठ विद्वान के रूप में भी आप की प्रसिद्धि व्याप्त रहेगी। कभी कभी आप असत्य भाषण या अफवाह आदि फैलाने में भी अपना सक्रिय योगदान प्रदान करेंगे। महिला वर्ग में आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा उनसे आप को पूर्ण रूपेण प्रशंसा की प्राप्ति होगी। भाइयों के प्रति आपका विशेष ध्यान रहेगा एवं यत्न पूर्वक उनकी सहायता करते रहेंगे एवं वे भी आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। धनैश्वर्य से आप सम्पन्न रहेंगे एवं इसके अभाव का आपको आभास नहीं होगा। आपके सेवक गण भी सुन्दर तथा गुणवान होंगे एवं आदर पूर्वक आपकी सेवा में सर्वथा तत्पर रहेंगे। आप में त्याग की भावना भी विद्यमान रहेगी एवं समयानुसार इस प्रवृति का आप समाज या परिवार के मध्य प्रदर्शन करते रहेंगे। आप का परिवार भी बड़ा होगा एवं सुख संसाधनों की प्राप्ति के लिए आप नित्य चिन्तित रहेंगे तथा उसे प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील भी रहेंगे।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

जीवन में आप किसी अन्य व्यक्ति, मित्र या सम्बन्धी की धन सम्पति को प्राप्त कर सकेंगे तथा सुख पूर्वक उसका उपभोग भी करेंगे। आप केवल अपनी ही नहीं अपितु अन्य जनों के विषय में भी सोचेंगे एवं प्रयत्न पूर्वक दूसरों की सहायता भी करते रहेंगे। आप सलाह देने या मंत्रणा आदि कार्य करने में अत्यन्त ही निपुण होंगे एवं सभी लोग आपकी इस दक्षता से लाभ उठायेंगे। भाई बन्धुओं का आप पूर्ण रूप से पालन तथा सहयोग करेंगे। आप एक बहादुरी तथा वीरता के गुणों से भी सुसम्पन्न रहेंगे। एवं साहस पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

गीतशास्त्र के आप एक श्रेष्ठ विद्वान हो सकेंगे तथा समाज में दूर दूर तक इस क्षेत्र में आपकी ख्याति रहेगी। आपका शरीर भी कान्ति तथा लावण्यता से युक्त रहेगा। काम भावना की आप में प्रबलता रहेगी तथा यदा कदा इससे आप व्याकुलता की भी अनुभूति करेंगे।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।
जातका भरणम्

देव गण में पैदा होने के कारण आपकी वाणी मधुर तथा श्रेष्ठ होगी। आपकी बुद्धि भी सरल रहेगी तथा आप अपने विचारों का आदान प्रदान सुगमता से सम्पन्न करेंगे एवं अन्यों के विचारों को भी सरलता पूर्वक ग्रहण करेंगे। आप को थोड़ी मात्रा में सात्विक भोजन करना अत्यन्त ही रूचिकर लगेगा। अन्य जनों के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा सज्जन दुर्जन की पहचान करने में भी आप समर्थ रहेंगे। साथ ही स्वयं भी श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा प्रतिपादित गुणों से युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के धन वैभव से भी आप सम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

आपका स्वरूप देखने में सुन्दर होगा तथा दानशीलता की प्रवृति से भी आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में इस प्रवृति के अनुपालन के लिए भी नित्य प्रयत्नशील रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करना पसन्द करेंगे एवं अनावश्यक भौतिकता तथा दिखावे से दूर ही रहने का यत्न करेंगे। इसके अतिरिक्त आप को शास्त्र ज्ञान भी विस्तृत रूप से रहेगा जिसमें आप एक विद्वान के रूप में समाज में सम्मान तथा ख्याति अर्जित कर सकेंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

वानर योनि में उत्पन्न होने के कारण आप में स्वाभाविक रूप से चंचलता का भाव विद्यमान रहेगा। मिष्ठान के आप अत्याधिक प्रेमी होंगे तथा इसे नित्य भक्षण करने के लिए लालयित रहेंगे। धन प्राप्त करने के लिए आप में व्याकुलता रहेगी तथा इसे प्राप्त करने में आप आतुरता का भी प्रदर्शन करेंगे। आपकी सभी संतति बुद्धिमान एवं गुणवान होंगी। विवाद आदि में भी आपकी रूचि रहेगी एवं अन्य जनों से आपका विवाद भी होता रहेगा। साथ ही वीरता के गुणों से भी आप युक्त रहेंगे तथा साहस पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे।

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।
सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरूष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी सन्तान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण

करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनि करण, मंगलवार चतुर्थ प्रहर तथा सिंह राशि के चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दायक रहेंगे। अतः आप 15 अपैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों, रोहिणी नक्षत्र, व धृतियोग तथा शकुनिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों को सम्पन्न न करे अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार, चतुर्थ प्रहर तथा सिंह राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता,

व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव नृसिंह भगवान की उपासना करनी चाहिए तथा शनिवार के उपवास भी रखने चाहिए। इसके साथ ही सोना, नीलम, लोहा, कम्बल, तिल, तेल, चर्मपादुकाएं आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इससे आपको इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।